ल्हासा की ओर

पाठ का सार / प्रतिपाद्य

राहुल सांकृत्यायन ने 1929 से 1930 में नेपाल के मार्ग से तिब्बत यात्रा की थी। यह पाठ उसी में से लिया गया है। तिब्बत की राजधानी ल्हासा के विषय में हमें बहुत-सी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती हैं। इस यात्रा में उन्होंने भिखमंगे का रूप धरा और तिब्बत के जनजीवन, संस्कृति, समाज, परिवेश, समस्याओं, विशेषताओं इत्यादि को बड़े नज़दीक से जाना और उकेरा है। लेखक ने इस पाठ में इतना सजीव और सटीक वर्णन किया है कि हम स्वयं को इससे सरलतापूर्वक जोड़ पाते हैं।

तिब्बत के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियाँ

- वहाँ की स्त्रियाँ परदा नहीं करती हैं।
- यहाँ भिक्षुओं का बहुत सम्मान होता है।
- यहाँ की चाय मक्खन, सोडा तथा नमक से बनती है।
- वहाँ के लोगों में छुआछूत तथा जाति-पाति का भेदभाव देखने को नहीं मिलता है।
- यहाँ के लोग सरल हृदय तथा विश्वासी होते हैं। धर्म के प्रति उनकी गहरी आस्था होती है।
- डाँड़े तिब्बत में खतरनाक जगहें कहलाती हैं। ये अत्यधिक ऊँचाई वाले स्थान होते हैं। इनकी ऊँचाई सोलह-सत्रह फीट तक हो सकती है। अतः यहाँ मीलों तक लोगों के निवास-स्थान नहीं होते हैं। इसी कारण यहाँ पर डाकुओं का बोलबाला है।

पाठ का उद्देश्य

- इस पाठ का उद्देश्य तिब्बत के जनजीवन, संस्कृति, समाज, परिवेश, समस्याओं, विशेषताओं इत्यादि से परिचय कराना है।

पाठ से मिलने वाली शिक्षाएँ / संदेश / प्रेरणा

- इस पाठ से शिक्षा मिलती है कि हमें दूसरे स्थानों में मात्र मनोरंजन के उद्देश्य नहीं घूमना चाहिए। वहाँ के जनजीवन, संस्कृति, समाज, परिवेश, समस्याओं तथा विशेषताओं को भी समझना चाहिए।